ISSN 2454-5163

26 अगस्त 2020, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 39, अंक 2, कुल पृष्ठ 36

# वीतराग-विज्ञान

( पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र )

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर संघीजी, सांगानेर, जयपुर (राज.)

# वीतराग-विज्ञान (445)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

**सम्पादक :**

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

**सह-सम्पादक :**

डॉ. संजीवकुमार गोधा

**प्रकाशक एवं मुद्रक :**

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

**सम्पर्क-सूत्र :**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

**शुल्क :**

| | | |
|---|---|---|
| आजीवन | : | 251 रुपये |
| वार्षिक | : | 25 रुपये |
| एक प्रति | : | 2 रुपये |

**मुद्रण संख्या :**

| | | |
|---|---|---|
| हिन्दी | : | 7000 |
| मराठी | : | 2000 |
| कन्नड़ | : | 1000 |
| **कुल** | : | **10000** |


## आत्मा का वेदन सुखरूप है

अहा! इस राग के साथ एकत्व की बंधकथा विसंवाद करने वाली है, जीव का अत्यंत अहित करने वाली है, अकथनीय दु:ख देने वाली है। राग विकल्प है – पुण्य का हो या पाप का; इसका करना और भोगना जीव को अत्यंत दु:खदायक है, क्योंकि एकपने से विरुद्ध है। अरेरे! तो भी अनादिकाल से जीव ने इसी बात को अनंतबार सुना है।

भगवान आत्मा ध्रुव चैतन्य और आनन्दस्वरूप है। इन्द्रियों की ओर झुकने का भाव कामभोग सम्बन्धी कथा है – मात्र दु:ख की कथा है। यह पहले अनंतबार सुनने में आयी है, परिचय में आयी है और अनुभव में भी आयी है। राग से भिन्न भगवान ध्रुवत्रिकाली का लक्ष्य व वेदना होना चाहिये, वह वेदन कभी आया नहीं है।

– प्रवचनरत्नाकर, भाग-1 पृष्ठ 69

**वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।**
**वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।**

वर्ष : 39 (वीर नि. संवत् - 2546) 445 अंक : 2

## जीवनि के परिणामनि...

जीवनि के परिणामनि की यह, अतिविचित्रता देखहु ज्ञानी ।।टेक।।
नित्य निगोदमांहितैं कढिकर, नरपरजाय पाय सुखदानी।
समकित लहि अन्तर्मुहूर्त में, केवल पाय वरै शिवरानी।।
जीवनि के परिणामनि... ।।1।।

मुनि एकादश गुणथानक चढि, गिरत तहाँतैं चित भ्रम ठानी।
भ्रमत अर्धपुद्गल परावर्तन, किञ्चित् ऊन काल परमानी।।
जीवनि के परिणामनि... ।।2।।

निज परिणामनि की संभाल में, तातैं गाफिल मत ह्वै प्रानी।
बंध मोक्ष परणामनि ही सों, कहत सदा श्री जिनवरवानी।।
जीवनि के परिणामनि... ।।3।।

सकल उपाधि निमित्त भावनि सों, भिन्न सु निज परिनति को छानी।
ताहि जानि रुचि ठानि होहु थिर, 'भागचंद' यह सीख सयानी।।
जीवनि के परिणामनि... ।।4।।

**– कविवर पण्डित भागचन्दजी**

## राग और आत्मा भिन्न-भिन्न हैं

भगवान आत्मा शुद्ध चैतन्य उपयोगस्वरूप है और उसकी व्यक्तता प्रगटता जानने-देखनेरूप ही होती है। इसकी शक्ति में से विकार का परिणाम प्रगट होना अशक्य है - ऐसा भगवान आत्मा चैतन्यशक्तिरूप स्वभावमात्र से अर्थात् जानने देखने के स्वभावभाव से जानता है कि' मैं एक हूँ।' जानने-देखने के स्वभावभाव से मैं एक हूँ। देखो ! यहाँ प्रभुत्वशक्ति ली है। आत्मा में एक प्रभुत्वशक्ति है, जिससे वह अखण्ड प्रताप से स्वतंत्ररूप से शोभायमान है - ऐसे आत्मा की विश्व को प्रकाशित करने में चतुर, विकासरूप, निरन्तर शास्वती सम्पदा है। यह बाह्य मकान, कुटुम्ब आदि सम्पदा आत्मा की नहीं है, यह तो जड़ है।

यहाँ तो कहते हैं कि भगवान आत्मा चैतन्यशक्ति के स्वभाव की सामर्थ्य से ऐसा जानता है कि परमार्थ से मैं एक हूँ। मैं और राग - इसप्रकार दो मिलकर एक नहीं; किन्तु राग से भिन्न मैं चैतन्यशक्तिमात्र एक हूँ।

यद्यपि मेरा चैतन्य स्वभाव और जगत के दूसरे जड़ द्रव्य एक क्षेत्र में रहते हैं, तथापि भिन्न-भिन्न हैं। आत्मा और जड़ पदार्थ यद्यपि एक क्षेत्र में रहते हैं, तथापि श्रीखण्ड की खटास व मिठास एक क्षेत्र में रहकर भी पूर्णतया भिन्न हैं; उसीप्रकार आत्मा का चैतन्यलक्षण और अन्य द्रव्यों का जड़स्वभाव एकमेकरूप से एक क्षेत्र में रहते हैं; तथापि स्पष्ट अनुभव में आते हुए स्वादभेद के कारण भिन्न हैं। भगवान आत्मा का स्वाद अनाकुल, आनन्दरूप और कर्म के फल/राग का स्वाद दु:खरूप है। इसप्रकार दोनों भिन्न-भिन्न हैं।

भगवान आत्मा अनाकुल आनन्द से भरा हुआ परिपूर्ण प्रभु पदार्थ है। अनाकुल आनन्द का वेदन करनेवाली पर्याय का स्वाद राग के स्वाद से सर्वथा भिन्न ही है। **- प्रवचनरत्नाकर भाग-2 पृष्ठ: 108-109**

**ज्ञातव्य है कि यह 26 अगस्त का अंक सितम्बर माह का ही अंक है।**

# सम्पादकीय

## भरत का अन्तर्द्वन्द

**चौथा अध्याय**

**(गतांक से आगे ...)**

( दोहा )

**शेष विजय यात्रा करें, उसके पहले दिव्य।**
**जिनवर के दर्शन करें, यही भावना भव्य।। १।।**

**मध्यरात्रि में ही गये, दर्शन को भरतेश।**
**भक्ति करने का अरे, था उल्लास विशेष।। २।।**

( वीर )

**एक दिवस भरतेश्वर को ऋषभेश्वर के आराधन के।**
**शुभ भाव हुये तो मध्यरात्रि में दर्शन करने जा पहुँचे।।**
**अन्तर में अति आनन्द हुआ वे दर्शन कर कृतकृत्य हुये।**
**रे हुये प्रफुल्लित अन्तर में स्तुति करने के भाव हुये ।। ३ ।।**

**वृषभेश आपकी दिव्यध्वनि सन्ताप मिटाने वाली है।**
**भव-भोगों में उलझे मन की उलझन सुलझाने वाली है।।**
**भवज्वाला में जलते जन को ठण्डक पहुँचाने वाली है।**
**भव-भव में भटके प्राणी को भवपार लगाने वाली है।। ४।।**

**वे जन हैं महाभाग्यशाली जो प्रतिदिन सुनने आते हैं।**
**वे जन तो महा अभागे हैं जो प्रतिदिन ना सुन पाते हैं।।**
**मैं उन्हीं अभागों में से हूँ जिनको मिलता है लाभ नहीं।**
**मैं प्रतिदिन आऊँ हे भगवन्! इतना मेरा सद्भाग्य नहीं।। ५।।**

प्रतिदिन की छोड़ो बात प्रभो! दिन में भी आना मुश्किल है।
इसलिये रात में आया हूँ दिन में आना न सम्भव है।।
सब आप जानते हैं प्रभुवर! क्या कहूँ आपसे हे भगवन्!।
बस यही चाहता हूँ स्वामिन् ! कैसे छूटे भव का बन्धन।। ६ ।।

मैं कैसे करूँ प्रार्थना कुछ सबकुछ पहले से निश्चित है।
उसमें वह फेरफार करना जो इच्छित है ना संभव है।।
जो निश्चित है सो निश्चित है यह दिव्यध्वनि में आया है।
यह कथन किसी से छुपा नहीं सबके सुनने में आया है।। ७ ।।

यह बात आपने बतलाई हम सभी जानते हैं यह सब।
कुछ भी कहने की बात नहीं है आप जानते हैं सबकुछ।।
इतना कह के कुछ शान्त हुये भरतेश्वर चिन्तन मुद्रा में।
वे चले गये वे चले गये अन्तरमुख अपने अन्तर में ।। ८ ।।

अर्धरात्रि में अरे अचानक दिव्यध्वनि की गूँज हुई।
दिव्यध्वनि सुनने को मिलकर सारी जनता उमड़ पड़ी।।
सभी सोचने लगे अचानक मध्यरात्रि में दिव्यध्वनि।
कैसे खिरी बताओ तुम भी सभी ओर से एक ध्वनि ।। ९ ।।

तब कहा किसी ने भरतेश्वर दर्शन के लिये पधारे हैं।
उनके निमित्त से असमय में भी दिव्यध्वनि का लाभ मिला।।
असमय में आये भरतराज असमय में दिव्यध्वनि गूँजी।
रे भरतराज हैं भाग्यवान उनके कारण ही ध्वनि गूँजी ।। १०।।





मध्यरात्रि में दिव्यध्वनि गूंजी भरतेश्वर के कारण।
यह बात नहीं है साधारण यश फैला है इसके कारण।।
माँ यशस्वती नन्दा देवी अति ही प्रसन्नता से बोलीं।
यह भरतराज मेरा बेटा जग में है महाभाग्यशाली।। ११।।

भरतेश्वर बोले माता से हे माँ ! मैं नहीं भाग्यशाली।
चाहे जो कुछ भी कहो किन्तु मत कहना मुझे भाग्यशाली।।
रे महाभाग्यशाली वे हैं जो प्रतिदिन दिव्यध्वनि सुनते।
हैं वृषभसेन तेरे बेटे प्रभुजी के गणधर बने हुये ।। १२।।

उनके समक्ष मैं क्या हूँ माँ ? वे ऋषभेश्वर के साथी हैं।
वे तो हैं महासन्त मुनिवर निज आतम के अभ्यासी हैं।।
आरम्भ हुई है जिस दिन से श्री ऋषभेश्वर की दिव्यध्वनि।
वे उस दिन से प्रतिदिन सुनते न छोड़ी उनने एक घड़ी।। १३।।

किन्तु अभागा बेटा[१] यह तो कभी नहीं जा पाता है।
दिन में तो समय नहीं मिलता इसलिये रात में आता है।।
मेरे कारण यदि असमय में भी दिव्यदेशना प्राप्त हुई।
कैसे हो गया भाग्यशाली तुम ही बोलो मेरी माई! ।। १४।।

जिनवाणी सुनना महाभाग्य जो महाभाग्य से मिलता है।
पर विषयलोलुपी सारा जग विषयों में उलझा रहता है।।
जो सुनते हैं प्रीतिपूर्वक प्रतिदिन जिनवर की वाणी।
वे साधारण जन भी हैं समझो मुझसे अधिक भाग्यशाली।। १५।।

१. अभागा भरत, परिशिष्ट-१

मुझको मिलता अवकाश नहीं रे रंचमात्र भी दिनभर में।
हे माँ! मैं उलझा रहता हूँ दुनियादारी के चक्कर में।।
बेटा तू महाभाग्यशाली तू चक्ररत्न का स्वामी है।
तू ऋषभेश्वर का प्रथम पुत्र तू सारे जग में नामी है ।। १६।।

यह चक्ररत्न सौभाग्य नहीं दुर्भाग्य दिखाई देता है।
प्रतिदिन जिनवाणी सुनने का सौभाग्य न मिलने देता है।।
जिस दिन जिनवाणी शुरू हुई उस दिन छाती पर आ बैठा।
किस दुविधा में मैं उलझ गया मेरी कुछ समझ नहीं आता।। १७।।

प्रतिदिन दिन में प्रत्येक बार हो दो घण्टे चौबीस मिनट।
प्रतिदिन दिन में नित तीन बार खिरती है जिनवर की वाणी।।
इसतरह रोज ही खिरती है कुल बारह मिनट सात घण्टे।
सब काम छोड़ दुनियाँ सुनती ना गिनती है सण्डे-मण्डे।। १८।।

दिग्विजय यात्रा करने को मैं चला हजारों वर्षों तक।
सदा भटकता रहा निरन्तर खण्ड-खण्ड छह खण्डों में।।
सारा जग सुने दिव्यध्वनि को मैं रहूँ भटकता दुनियाँ में।
कैसा मैं महाभाग्यशाली जो रहा भटकता दुनियाँ में ।। १९।।

मत कहना मुझे भाग्यशाली मुझको गाली सी लगती है।
बस लड़ो-लड़ो लड़ते ही रहो – यह बात न अच्छी लगती है।।
दुनियाँ से लड़ो लड़ते ही रहो अर लड़ो-लड़ो की बात करो।
बोलो बोलो बोलो माई ! क्या भाग्य इसी को कहते हैं?।। २०।।



क्या भाग्य इसी को कहते हैं सद्भाग्य इसी को कहते हैं ?।
यह भरत अभागा ही अच्छा इसको ऐसा ही रहने दो।।
मत करो प्रशंसा मेरी अब मुझको काँटों-सी चुभती है।
मीठी-मीठी झूठी शंसा अब मुझको बहुत अखरती है।। २१।।

इस मानव भव में चक्रवर्ती हो सर्वाधिक वैभवशाली।
आखिर में यह सारा वैभव बस एक परिग्रह ही तो है।।
और पाँचवाँ पाप परिग्रह सारी दुनियाँ जाने यह।
भले प्राप्त हो पुण्योदय से आखिर में तो पाप ही है।। २२।।

अरे पाप का पिण्ड परीग्रह संकट ही तो लायेगा।
अधिक कहें क्या विध-विध की विपदाओं में उलझायेगा।।
और भाई को भाई से ही लडने को उकसायेगा।
सोचो यह कितना अच्छा है? है अंश नहीं अच्छाई का।। २३।।

इसके रहते हम यदी मरे तो नरकों में ही जावेंगे।
इसे त्याग कर साधु हुए तो स्वर्ग-मोक्ष में जावेंगे।।
यह अभाग्य की सीमा है यह है सचमुच विष की प्याली।
इसके कारण क्यों कहते तुम मुझको महाभाग्यशाली।। २४।।

हे महामात्य! हे सेनापति! मैंने जो माँ से बात कही।
वह बात आपसे कहता हूँ जो नहीं आपसे कभी कही।।
इस चक्ररत्न का मिलना यद्यपि महाभाग्य से होता है।
यह चक्ररत्न पर दिव्यध्वनि सुनने में बाधक होता है ।। २५।।

यद्यपि यह बात अखरती है पर अब यह सब करना होगा।
निधत्ति-निकाचित कर्मों को तो हमें भोगना ही होगा।।
गले पड़े इस चक्ररत्न को हमें निभाना ही होगा।
सहजभाव से जो कुछ है उसको अपनाना ही होगा ।। २६।।

यद्यपि मैं नहीं चाहता हूँ पर ठुकराना भी सम्भव ना।
अब अपनाना तो होगा ही दिल से अपनाना सम्भव ना।।
जो कुछ भी है जैसा भी है अपने ही भावों का फल है।
यद्यपि यह अपना नहीं किन्तु अब तो समझो अपना ही है।। २७।।

अब तो समझो अपना ही है जो कुछ भी है जैसा भी है।
जब छोड नहीं सकते इसको तब यह दायित्व हमारा है।।
जब तक है अविरत गुणस्थान तब तक तो अरे रहेगा ही।
अब अधिक विकल्पों से क्या हो सब काम समय पर ही होगा।। २८।।

रे सुनो अभागा भरत आपसे एक निवेदन करता है।
है नहीं शक्ति की कोई कमी पर मुझको हिंसा इष्ट नहीं।।
दिग्विजय चाहता हूँ ऐसी जिसमें न खून की बूँद बहे।
बोलो मन्त्रीगण सेनापति ! ऐसा भी तो हो सकता है।। २९।।

दिग्विजय यात्रा मेरी यह सद्भाव यात्रा बन जावे।
सद्भाव यात्रा का स्वरूप वात्सल्य भाव से समझावें।।
सन्देश मित्रता का भाई अत्यन्त नेह से भिजवावें।
साम-दाम से काम करें पर दण्ड-भेद में ना जावें ।। ३०।।





जो कहा आपने सभी सत्य पर देश अखण्डित होगा तो।
जिनवाणी की सत्य देशना का भी लाभ मिले सबको।।
चक्ररत्न भी शत्रु नहीं वह हम सबका सहयोगी है।
जो जैसा आप कहेंगे जब वैसा ही काम करेंगे हम ।। ३१।।

हम सभी अहिंसक हैं राजन् ! सब ऋषभेश्वर के अनुयायी।
हम सभी जानते हैं कि आप भी सच्चे उनके अनुयायी।।
अन्तर से भोगों से विरक्त श्रद्धानी ज्ञानी ध्यानी हैं।
अनुभवी आत्मा के स्वामिन् ! अन्तर से आतमज्ञानी हैं।। ३२।।

दिग्विजय यात्रा में स्वामिन् ! ना एक खून की बूँद बहे।
ना कोई सामना करे और ना कोई सामना कर सकता।।
सब शक्ति को पहिचानेंगे सद्भाव आपका जानेंगे।
सहज भाव से ही सब जन सहयोगी भी बन जायेंगे ।। ३३।।

जो तुम कहते सब बात सही पर समय सहज ही जाता है।
अर ऋषभदेव की वाणी का सद्लाभ नहीं मिल पाता है।।
अर अपने आतमहित का भी कुछ काम नहीं हो पाता है।
इसमें ही उलझे रहते हैं सब समय व्यर्थ में जाता है।। ३४।।

हम सभी रखेंगे ध्यान आपके भावों को पहिचानेंगे।
हम देखेंगे सब काम आपको अधिक नहीं उलझावेंगे।।
यदि मिल जावे हमें आपका थोड़ा-बहुत मार्गदर्शन।
उसके ही अनुसार हम सभी कामों को निबटा लेंगे।। ३५।।

( क्रमशः )

छहढाला प्रवचन

## संवर भावना

**जिन पुण्य-पाप नहिं कीना, आतम अनुभव चित दीना।**
**तिनही विधि आवत रोके, संवर लहि शिव अवलोके।।१०।।**

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

**(गतांक से आगे....)**

संसार में यदि कोई हमें दूसरों से होशियार एवं श्रेष्ठ कहे तो सुनकर खुशी होती है; परन्तु सन्त कहते हैं कि हे भाई ! तू चैतन्यस्वरूप आत्मा में सर्वश्रेष्ठ है, पुण्यभाव और देवलोक के भव से भी तू अधिक ऊँचा और महान है। अपनी महानता की यह बात सुनकर तुझे उल्लास क्यों नहीं आता? पुण्य से भी भिन्न अपने सुन्दर चैतन्य स्वभाव की बात सुनकर तू प्रसन्न हो। राग से भिन्न चैतन्यस्वभाव की ओर अपने वीर्य को उल्लसित कर।

भाई ! एक बार तो और सब कुछ भूलकर अपने स्वभाव की बात सुनकर खुश हो उसमें उत्साह तो ला। तेरे आत्मा में वीतरागता का बीजारोपण होगा, जिसमें से सम्यग्दर्शन, केवलज्ञान और मोक्षरूपी महान फल पकेंगे, तुझे परमसुख का अनुभव होगा। ऐसे जैनधर्म को पाकर तू अब राग से भिन्न उपयोग द्वारा आत्मसुख का साक्षात्कार कर। यह कार्य इस जीवन में अभी नहीं करेगा तो कब करेगा ? ऐसा संयोग सदा नहीं रहेगा।

यदि तू अपने चैतन्य प्रभु की उपेक्षा करके उसके विरोधी राग का आदर करेगा तो चैतन्य प्रभु तुझ पर कैसे प्रसन्न होगा? भाई ! राग के सामने देखने पर चैतन्य का वेदन नहीं होगा, चैतन्य के चिन्तन में उपयोग जोड़ने से चैतन्य का वेदन होगा।





ज्ञानी अपने आत्मा को आनन्दरूप देखते हैं और रागादि को दु:खरूप देखते हैं अर्थात् वे अपने उपयोग को राग से भिन्न करके चैतन्यस्वभाव में जोड़ते हैं, इससे उन्हें अतीन्द्रिय सुख के साक्षात्कारपूर्वक कर्मों का संवर होता है। शुभाशुभ भाव तो कषायचक्र हैं, उनकी भावना में मात्र दु:ख ही है और उनसे भिन्न आनन्दमय चैतन्यस्वभाव की भावना में मात्र सुख ही है। इसप्रकार वस्तुस्वरूप का बारम्बार चिन्तन करना संवर भावना है, उसके फल में संवर अर्थात् सुख प्रगट होता है।

जैसे ढाल के द्वारा शस्त्रों का प्रहार रोका जाता है, वैसे शुद्धोपयोगरूपी ढाल के द्वारा कर्मों को रोका जाता है। सर्वप्रथम शुद्धात्मा की अनुभूति द्वारा सम्यग्दर्शन होने पर मिथ्यात्वादि कर्मों का आस्रव रुक जाता है। वीतराग-विज्ञान रूपी ढाल आठ कर्मों के प्रहार से आत्मा की रक्षा करती है।

शुद्धोपयोगरूप परिणमित आत्मा में रागादि या कर्म का कर्तापना नहीं है। चैतन्य स्वरूप आत्मा कर्ता और राग-द्वेष या जड़ शरीर की क्रिया, उसका कार्य - ऐसा कर्ताकर्मपना नहीं है। भगवान आत्मा चैतन्यस्वरूप है, अत: उसका कार्य भी चैतन्यभावरूप है। ऐसे आत्मा में जो अपना चित्त जोड़ता है, उसे ही संवर होता है तथा जो जीव राग के कर्तृत्व में रुका है, उसे आस्रव होता है। आत्मा में एकाग्रता रूप शुद्धोपयोग में राग नहीं है, इसलिए उसमें कर्म का आस्रव भी नहीं है। ज्ञानी का उपयोग '**जिन पुण्य-पाप नहिं कीना, आतम अनुभव चित दीना**' इस पंक्ति के अनुसार आत्मानुभव में लीन रहता है, वे स्वरूप में गुप्त होकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं।

अहो! जो ज्ञान, भेदविज्ञान करके आत्मा का अनुभव करे, वही सच्चा ज्ञान है, इसके बिना बाहर का सब जानपना अज्ञान है, वह जीव को भवबन्धन से छूटने में कार्यकारी नहीं है। संसार में मिथ्यात्व जैसा कोई अहितकर और वीतराग-विज्ञान जैसा हितकर कोई और नहीं है। पुण्य या शुभराग को हितकर नहीं कहा, वीतराग-विज्ञान को ही हितकारी कहा है।

जो पुण्य-पाप रहित आत्मा का अनुभव करते हैं, वे जीव धन्य हैं। उन्हें ही संवर या सुख का साक्षात्कार होता है।

**प्रश्न –** सम्यग्दृष्टि को भी पुण्य-पाप भाव तो होते हैं ?

**उत्तर –** साधक जीव को सम्यग्दर्शन के साथ-साथ पुण्य-पाप होने पर भी सम्यक्त्वादि रूप शुद्ध उपयोग में पुण्य-पाप का कर्तृत्व नहीं है, इसलिए वह उनका कर्ता नहीं है। 'जिन पुण्य-पाप नहिं कीना' – यह बात शुद्ध चेतनारूप परिणमित धर्मात्मा ही करते हैं। मुनियों को तो चैतन्य में विशेष लीनता, प्रचुर वीतरागभाव उत्पन्न हुआ है अर्थात् पुण्य-पाप, राग-द्वेषादि भाव भी बहुत छूट गये हैं। उन्हें जितने अंशों में राग-द्वेष हैं, उतने अंशों में आस्रव हैं और जितने अंशों में शुद्धोपयोग है, उतने अंशों में संवर है।

वीतरागी रत्नों का खजाना चैतन्य भण्डार भगवान आत्मा अन्दर विद्यमान है, धर्मी ने उसके भोग में अपना उपयोग जोड़ा है। महान आनन्द स्वरूप मोक्ष की प्राप्ति का यही उपाय है। धर्मी को अपने अनुभव में मोक्ष के आनन्द के नमूने का स्वाद आ जाता है। अन्तर्मुख परिणति द्वारा आनन्द का अनुभव करना ही मोक्षमार्ग और मोक्ष है। धर्मी को अपने में अपने आनन्द का अनुभव होता है। उन्हें अपने आनन्द की खबर ही न पड़े – ऐसा नहीं होता। शुद्धोपयोगपूर्वक सम्यग्दर्शन होने पर चौथा गुणस्थान प्रगट होता है और तभी से आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्द का वेदन प्रारम्भ हो जाता है। भले ही वह आनन्द अल्प हो; किन्तु वह सिद्ध भगवान के पूर्ण आनन्द की जाति का है, उसकी जाति पुण्य-पाप से अत्यन्त भिन्न है, उसमें पुण्य-पाप या कषाय का स्वाद नहीं है तथा वह राग या पुण्य से उत्पन्न नहीं हुआ है, वह तो राग रहित चैतन्यस्वभाव में से आया है। धर्मी को उस आनन्द की अस्ति में अनन्त गुणों का स्वाद आता है, उसमें राग की, कर्म की या इन्द्रिय विषयों की नास्ति है। ऐसी शुद्धदशा का नाम संवर है और उसी की भावना करनी चाहिए।

जितनी शुद्धता है, उतना संवर है और जितनी अशुद्धता है, उतना आस्रव है। शुद्धता अर्थात् वीतरागता और अशुद्धता अर्थात् मोह-राग-





द्वेष। इन दोनों की जाति भिन्न-भिन्न है। राग कभी संवर का कारण नहीं होता और वीतराग-भाव से कभी आस्रव नहीं होता। इसप्रकार जो राग और वीतरागता की भिन्नता को जानता है, वह राग से विरक्त होकर वीतरागी चैतन्य में उपयोग जोड़ता है।

जो शुभराग को दुःख का कारण न मानकर संवर अर्थात् सुख का कारण मानता है, वह उसे कैसे छोड़ेगा? भाई! राग भले शुभ हो; परन्तु है तो वह कषाय का ही भेद, कषाय में सुख कैसे हो सकता है? जिसमें अचिन्त्य अनन्त अतीन्द्रिय आनन्द भरा है, ऐसे आत्मा की दृष्टि और उसमें एकाग्रता करने से राग से भिन्न ज्ञानमय परिणति उत्पन्न हो जाती है, उसमें पाप-पुण्य का कर्तृत्व नहीं रहता। यही साधकदशा है। मिथ्यात्व दशा में मात्र दुःख का वेदन था, साधकदशा होने पर अतीन्द्रिय सुख का साक्षात्कार हुआ। इसप्रकार दुःख का नाश और सुख का वेदन ही संवर है। आनन्द के महासागर में से आनन्द की एक तरंग उछलते ही धर्मी को भान हो जाता है कि अहो...मैं ऐसे आनन्दरस का महासागर हूँ। जैसा स्वाद पुण्य-पाप में कभी नहीं चखा था, वैसा स्वाद स्वानुभव द्वारा धर्मी को वेदन में आता है।

जिस भाव से कर्म आते हैं, उससे विरुद्ध भावों से ही उनका छेदन हो सकता है। शुभराग से कर्मों का आस्रव होता है, अतः उससे ही कर्मों का संवर नहीं हो सकता। मिथ्यात्व से आनेवाले कर्म सम्यग्दर्शन द्वारा रोके जा सकते हैं और राग से आनेवाले कर्म वीतरागभाव द्वारा रोके जा सकते हैं।

पुण्यभाव में भी दुःख है; परन्तु अज्ञानी को उसमें दुःख नहीं लगता, क्योंकि उसे चैतन्यसुख की खबर नहीं है। भाई! चैतन्य के अनुभव बिना सुख कैसा? राग में तू दुःखी ही है, राग रहित चैतन्य के अनुभव में ही सुख है। ऐसे सुख का साक्षात्कार होना ही धर्मीजीव की अंतरंग निशानी है। चैतन्य की अनुभूति और शुभराग, दोनों एक-दूसरे के विरुद्ध हैं। चैतन्य की अनुभूति में सुख का वेदन है और राग में दुःख का वेदन है। चैतन्य का वेदन मोक्ष का कारण है और राग का वेदन संसार का कारण है। जिसे चैतन्य

और राग की भिन्नता की खबर नहीं है, वह राग को ही सुख का कारण मानता है। अहा ! चैतन्यस्वरूप में चित्त लगाते ही जीव पुण्य-पाप से भिन्न हो जाता है और उसे कर्मों का आगमन रुक जाता है। शुद्ध दशा होने पर जब अशुद्धता नहीं रहती, तब पुद्गलों में भी कर्मरूप परिणमन नहीं होता। जीव की पर्याय में अशुद्धता होने पर कर्म आते हैं और शुद्धता होने पर कर्म नहीं होते - ऐसा सहज सुमेल होने के कारण निमित्त की अपेक्षा ऐसा कहा जाता है कि जीव ने कर्मों का संवर किया। जीव ने कभी सुख का स्वाद नहीं चखा, इसलिए वह बाह्य पदार्थों में सुख की मिथ्या कल्पना करता है। मैं स्वयं आनन्द स्वरूप वस्तु हूँ - ऐसा अवलोकन किये बिना मोक्षमार्ग प्रगट नहीं होता, संवर नहीं होता, धर्म नहीं होता, सुख नहीं होता। मैं अनन्त चैतन्यशक्ति का पिण्ड आनन्दमय आत्मा हूँ - ऐसा अनुभव होने पर चित्त उसमें लग जाता है, अब राग में चित्त नहीं लगता। राग से भिन्न अतीन्द्रिय ज्ञान में आनन्द का साक्षात्कार होता है। उस आनन्द के अंश के वेदन में आनन्द स्वरूप अखण्ड आत्मा प्रतीति में, ज्ञान में और अनुभूति में आ जाता है।

परपदार्थों में चित्त को जोड़ने से पुण्य-पाप की उत्पत्ति होती है और आत्मस्वभाव में चित्त को जोड़ने से पुण्य-पाप से निवृत्ति होकर सुख का वेदन होता है; अत: दोनों की दिशा विपरीत है। आत्मा में एकाग्र होने से चैतन्यरसमय आनन्द-धारा निकलती है तथा बाह्य पदार्थों के आश्रय से पुण्य-पाप भाव उत्पन्न होते हैं, जिनका स्वाद आकुलतारूप है। उपयोग जब आत्मा के आनन्द का स्वाद लेने में जुड़ता है, तब पुण्य-पाप से हट जाता है और वीतरागी शान्ति का वेदन करने लगता है। शान्ति का स्वाद चखने के पश्चात् अब राग में चित्त नहीं जुड़ता और कर्म भी नहीं आते। इसप्रकार भेदज्ञान सहित संवर भावना द्वारा संवरदशा प्रगट होती है। वीतरागी सर्वज्ञ तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा कहा गया यही मार्ग है।

इसप्रकार संवर भावना का वर्णन पूरा हुआ। **(क्रमश:)**





**नियमसार प्रवचन -**

## आत्मध्यान ही प्रतिक्रमण है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ९२ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं -

**उत्तमअट्ठं आदा तम्हि ठिदा हणदि मुणिवरा कम्मं।**
**तम्हा दु झाणमेव हि उत्तमअट्ठस्स पडिकमणं।।९२।।**

( हरिगीत )

**उत्तम पदारथ आतमा में लीन मुनिवर कर्म को।**
**घातते हैं इसलिए निज ध्यान ही है प्रतिक्रमण।।९२।।**

आत्मा उत्तम पदार्थ है। उत्तम पदार्थरूप आत्मा में स्थित मुनिराज कर्मों का नाश करते हैं। इसलिये आत्मध्यान ही उत्तमार्थ प्रतिक्रमण है।

**(गतांक से आगे....)**

मुख्यरूप से यहाँ मुनि को लक्ष्य करके कथन है; परन्तु गृहस्थों को भी उसका ज्ञान तो करना चाहिये कि निश्चय से मुनि का उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण क्या है? चैतन्य के भान बिना आहारादि छोड़कर देहत्याग कर देना, वह परमार्थ से प्रतिक्रमण नहीं है; किन्तु उत्तमार्थ अपने आत्मा के आश्रय से रहना ही सच्चा उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण है। इस आत्मा के लिये अपना आत्मा ही सर्वोत्तम पदार्थ है, इससे अन्य अरिहन्त अथवा सिद्ध का आत्मा भी अपने लिये उत्तम पदार्थ नहीं है; क्योंकि उनके आत्मा से अपने आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता है। अपना कल्याण तो अपने आत्मा के आश्रय से ही है, इसलिये हे जीव! तेरे लिये तो तेरा आत्मा ही उत्तमोत्तम पदार्थ है। ऐसे उत्तम पदार्थ का श्रद्धान-ज्ञान करके उसमें स्थिर रहनेवाले मुनिगण कर्मनाश करते हैं; अतः उन मुनियों को अपने

उत्तम आत्मपदार्थ का ध्यान ही उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण है। गृहस्थों को भी प्रथम ऐसी ही श्रद्धा करनी चाहिये।

यहाँ इस गाथा में निश्चय उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण का स्वरूप कहा है। जिनेश्वर के मार्ग में मुनियों की सल्लेखना के समय बियालीस आचार्यों द्वारा उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण दिए जाने के कारण देहत्याग व्यवहार से धर्म है।

देहत्याग का समय सन्निकट होने पर मुनिराज सल्लेखना करते हैं। अहो! जिन्हें चैतन्य का भान है, जो कारणपरमात्मा का आश्रय लिए हुए हैं - ऐसे मुनिवर देह छूटने का समय निकट आने पर सल्लेखना करते हैं। उससमय वे बियालीस आचार्यों के पास जाकर आज्ञा माँगते हैं। यह तो उस उत्तम चौथे काल की बात है, आजकल तो बियालीस आचार्य हैं ही कहाँ? बियालीस आचार्य न हो तो कम से कम दो आचार्यों से पूछकर सल्लेखना करे- ऐसी भी बात आती है। बियालीस आचार्यों से पूछने में वास्तव में अपने परिणामों की दृढ़ता सूचित होती है अर्थात् सल्लेखना करने का भाव तबतक बराबर टिका रहता है; 'मैं निःशंकपने समाधि धारण करूँगा'- ऐसा भाव दृढ़रूप से बना रहता है। इसप्रकार यह व्यवहार का कथन है।

निश्चय से तो उत्तम अर्थ ऐसा जो अपना आत्मस्वभाव उसमें स्थित रहना ही सच्ची सल्लेखना है और वही उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण है - ऐसा अब कहेंगे।

मुनि के सब पदार्थों में उत्तम - ऐसा जो अपना आत्मा, उसका भान होने से मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण तो होता ही है। तदुपरान्त यहाँ तो मृत्युकाल निकट आने पर अनन्तकाल में नहीं किया - ऐसा उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण मुनि के कैसा होता है, उसकी बात है।

प्रथम ही मुनि के व्यवहार उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण की बात करते हैं। ''जिनेश्वर के मार्ग में मुनियों की सल्लेखना के समय बियालीस आचार्यों





द्वारा उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण कराया जाने के कारण, देहत्याग व्यवहार से धर्म है।'' मुनि ने पहले ही शुद्ध कारणपरमात्मा का ध्यान करके अनादि के मिथ्यात्व को तो छोड़ा ही है, तत्पश्चात् उसमें विशेष स्थिरता से कुछ काल तक मुनिदशा का भी पालन किया है। अन्त में समाधिमरण का समय आने पर वह किसमें स्थिर होता है और किससे पराङ्मुख होता है - यह बतलाते हैं। देह तो देह के छूटने के काल में छूट जाती है; परन्तु उससमय मुनि अपने स्वरूप में स्थिर रहकर शान्ति को बनाये रखता है - यही उसका उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण है। इस उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण को अंगीकार करके समाधिमरण करने का अभिलाषी मुनि बियालीस आचार्यों से पूछता है अर्थात् वहाँ तक अपने उसप्रकार के भावों को लम्बायमान करता है - ऐसी उसके उन भावों की दृढ़ता है। जो विचक्षण हों, समाधिमरण के सब प्रकारों के ज्ञाता हों - ऐसे समर्थ आचार्यों के पास से समाधिमरणपूर्वक देहत्याग करने की आज्ञा लेता है। उसमें निमित्तरूप से बियालीस आचार्यों की आज्ञा और देहत्याग व्यवहार से धर्म है; क्योंकि वह सब शुभराग में समाहित है।

अब निश्चय से उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण का स्वरूप कहते हैं। नौ प्रकार के अर्थों में सर्वोत्तम अर्थ निज आत्मा है, उसमें स्थिरता करना ही उत्तमार्थ - प्रतिक्रमण है।

''निश्चय से, नौ अर्थों में उत्तम अर्थ आत्मा ही है; सच्चिदानन्दमय कारणसमयसारस्वरूप निजात्मा में जो तपोधन स्थित रहते हैं, वे तपोधन नित्यमरणभीरु हैं; इसीलिये वे कर्मविनाश करते हैं।''

आत्मा ज्ञानानन्दमय कारणसमयसारस्वरूप त्रिकाल है, उसी त्रिकाली चैतन्यभगवान में से सिद्धदशा प्रगट होती है - ऐसा कारणसमयसार आत्मा ही समस्त पदार्थों में सर्वोत्तम पदार्थ है और उसमें स्थिरता ही मुनियों का उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण है। शास्त्र में किसी-किसी मुनि की

बारह-बारह वर्ष की समाधि की बात आती है, वहाँ वे उसप्रकार का अभ्यास करते हैं, और किसी मुनि की अचानक अल्पकाल में भी देह छूट जाती है। सच्चिदानन्दमय निजकारण-परमात्मा में लीनतापूर्वक समाधि से देह छूटना ही उत्तमार्थ-प्रतिक्रमण है। अहो! देह तो सभी जीवों की छूटती है; परन्तु चैतन्य में लीनतापूर्वक देह छूटना ही सफल है।

त्रिकाली ध्रुव आत्मा को 'समयसार' कहा, उसमें त्रिकाली ध्रुव परिणमन की बात भी आ गई; क्योंकि 'समयसार' अर्थात् सम+अय+सार = सम्यक् प्रकार से जाने और परिणमे - ऐसा शुद्ध आत्मा ही समयसार है। यहाँ त्रिकाली आत्मा को कारणसमयसार कहा, अतः उसमें त्रिकाली ध्रुव ज्ञान और त्रिकाली ध्रुव परिणमन भी साथ में आ गया - ऐसा 'सच्चिदानन्दमय कारणसमयसार भगवान मैं हूँ' - ऐसा प्रथम भान करना वह सम्यग्दर्शन है। ऐसे भान बिना मुनिपना नहीं होता। अहो! युवावस्था में भी देह तो छूट जाती है न! इसका उदाहरण प्रत्यक्ष देखने में आता है; परन्तु आत्मभानपूर्वक देह छूटना ही सच्चा समाधिमरण है। मैं तो चैतन्यघन आत्मा हूँ - ऐसा जिसने भान किया और उसमें स्थिर हुआ, उसी को समाधि-मरण होता है और वह शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त कर लेता है। जिसने जीवन में उसप्रकार का अभ्यास किया हो - तैयारी की हो, उसी को अन्तसमय में समाधिमरण हो सकेगा। देखो! मुनि तो सदाकाल समाधिमरण के लिये तैयार हैं। समाधि का समय आने पर समर्थ आचार्यों से पूछते हैं कि हे प्रभो! हमारी समाधिमरण की योग्यता है कि नहीं? हमें समाधिमरण की आज्ञा दीजिये - ऐसे आज्ञा माँगते हैं। सामनेवाले आचार्य महाविचक्षण और मुनि के हितचिन्तक हैं, वे उस मुनि की योग्यता देखकर समाधि की आज्ञा देते हैं। मुनि को अपनी आत्मा की तो पहचान है ही, अतः आचार्य की आज्ञा मिलते ही उनका





उत्साह बढ़ जाता है और वे चैतन्य में लीनतापूर्वक समाधिमरण करते हैं।

जो मुनि देह से भिन्न आत्मा में लीन हैं, वे नित्यमरणभीरू हैं। उन ने जीवन जीते हुए भी मरण का ज्ञान साथ में रखा था, अतः उनके देह के संयोग में राग और वियोग में द्वेष नहीं रहा। देह संयोग के समय भी उससे भिन्नता का भान है अर्थात् संयोग के समय ही वियोग का भी भान है; इसलिये वे नित्यमरणभीरू हैं। जिसको देह के संयोग से भिन्नता का भान नहीं है, उसे देह के वियोगकाल में घबड़ाहट हुए बिना रहेगी नहीं। जिसे चैतन्य की नित्यता का भान है, देह के संयोगकाल में भी उसके वियोग का भान होने से देह से प्रीति नहीं है, वे ही नित्यमरणभीरू मुनि हैं। जीवन के काल में ही उसके वियोग को जाननेवाले और संयोग के अभावरूप चैतन्य में रहनेवाले मुनियों को मरणकाल में भय नहीं होता; क्योंकि वे तो नित्यमरणभीरू ही हैं। किसी भी धर्मी को एक क्षण भी संयोग से भिन्नता का भान छूटता नहीं, इसलिये उन्हें देहादि के संयोग के समय रुचिरूप राग नहीं होता और वियोग में अरुचिरूप द्वेष नहीं होता।

अहो! इस जगत में वैराग्य के प्रसंग देखकर तो ऐसा लगता है कि बस, एक आत्मकार्य ही करने जैसा है। शरीर तो सबका ही छूटनेवाला है; परन्तु मैं तो राग से भिन्न चैतन्यस्वरूपीकारणपरमात्मा हूँ - ऐसे भान से जिसने देहादि से अपने को भिन्न जाना, उसे देहत्याग के समय भय नहीं होता, उसने तो उसे सदा छूटा ही जाना है। अज्ञानी ने जीवनकाल में भिन्नता जानी नहीं; इसलिये उसे देह के संयोग का रस व राग है तथा उसके वियोग के समय में द्वेष भी होता है। अहो! सन्त तो जीवनकाल में ही मरण को हाथ में रखकर खड़े हैं। अर्थात् उनकी देह के ऊपर दृष्टि नहीं है, उनकी तो देह से भिन्न चैतन्य की शाश्वतता पर ही दृष्टि और लीनता है तथा जीवन-मरण में समता है - ऐसे मुनियों को समाधिमरण होता है। **(क्रमशः)**

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

# वीर्य शक्ति

**आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।**

**(गतांक से आगे....)**

वीर्य शक्ति में स्वरूपरचना की सामर्थ्य है। वहाँ द्रव्य-गुण तो त्रिकाल ध्रुव एकरूप हैं, अतः उनमें तो रचना करने का कोई काम ही नहीं है। जो कोई भी रचना होती है, वह पर्याय में होती है; **ज्ञान-दर्शन आदि अनन्तगुणों की निर्मलपर्याय की रचना करना वीर्यशक्ति का कार्य है।** व्यवहार की रचना करना वीर्यशक्ति का कार्य नहीं है; क्योंकि निर्मलपरिणति में व्यवहार का/राग का अभाव है।

व्यवहार है अवश्य, परन्तु ज्ञान तो उसे मात्र जानता ही है।

भाई! सूक्ष्म बात है। **जहाँ स्व के आश्रय से श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र की शुद्ध परिणति प्रगट हुई, उस समय जो रागांश है, उसे भी ज्ञान मात्र जानता है।** उस समय भी प्रगट हुई ज्ञान की स्व-परप्रकाशक पर्याय सहज ही अपने से भिन्न रहकर अपने से ही अपने को जानती है, राग के कारण नहीं।

**अपने ज्ञान की पर्याय ही ऐसी सामर्थ्यवाली है कि वह स्व और पर को अपने से ही जानती है।**

यहाँ कोई कहे कि व्यवहार अर्थात् शुभराग करते-करते निश्चय/सिद्धदशा प्रगट हो जायेगी; परन्तु उसकी यह बात मिथ्या है, उसे आत्मा की निर्मल वीतराग परिणति कैसे प्रगट होती है? - इसकी खबर नहीं है अर्थात् उसके निर्मलपरिणति की रचना करनेवाला वीर्य ही प्रगट नहीं होता।





अरे, भगवान सर्वज्ञ परमेश्वर का अभी इस भरतक्षेत्र में विरह है; परन्तु विदेहक्षेत्र में तो आज भी साक्षात् परमात्मा सर्वज्ञपद में विराजमान हैं। एक करोड़ पूर्व की उनकी आयु है। एक पूर्व में ७० लाख ५६ हजार करोड़ वर्ष होते हैं।

**स्वरूप की रचना करने की सामर्थ्य वीर्यशक्ति में है, स्वरूप की श्रद्धा-ज्ञान-रमणतारूप जो शुद्ध चैतन्य परिणति की रचना होती है, वह वीर्यशक्ति का कार्य है। आत्मा स्वयं की वीर्यशक्ति द्वारा वीतराग-परिणति की रचना करता है। यह शुद्ध परिणति प्रशस्तराग का कार्य नहीं है।**

जिसप्रकार आत्मा में वीर्यगुण है, उसीप्रकार एक अकार्य-कारणत्व नाम का गुण भी है। वीर्यगुण में इस अकार्यकारणत्व गुण का रूप है, इसमें स्वरूप की रचना होनेरूप कार्य में व्यवहार रत्नत्रय का राग कारण होवे - ऐसा कभी नहीं होता।

**आत्मा राग का कारण भी नहीं है और कार्य भी नहीं है। चैतन्यभाव कारण और राग उसका कार्य - ऐसा कदापि नहीं होता।**

देखो! इतना स्पष्ट वस्तुस्वरूप होने पर भी व्यवहार से निश्चय होता है, अभी ऐसी विपरीत मान्यता चलती है; परन्तु भाई! **रागभाव तो विकार है/पामरता है, उससे प्रभुता कैसे प्रगट हो सकती है? और निर्मलानन्द का नाथ आत्मा चिदानन्दप्रभु रागभावरूप क्लेश की रचना कैसे कर सकता है?**

पहले जमाने में जो सर्राफ के यहाँ खोटा सिक्का लेकर आता था तो सर्राफ उसे वापिस नहीं जाने देता था, बल्कि दुकान की देहरी पर उस सिक्के को कील से जड़ देता था। तात्पर्य यह है कि वह उस खोटे सिक्के को बाजार में चलने नहीं देता था।

इसीप्रकार यह भगवान वीतराग सवर्ज्ञदेव की पेढ़ी है, इसमें खोटी बात चलने नहीं दी जाती। परमात्मा की सत्यार्थ बात संतों की आढ़त में, जगत में जाहिर की जाती है। **भगवान कहते हैं तेरे में वीर्य नाम का जो**

**गुण है, उसका रूप आत्मा के अनन्तगुणों में है; इसलिए वे अनन्तगुण अपने वीर्य से अपने स्वरूप की/सम्यग्दर्शन आदि की रचना करते हैं और विकार की रचना नहीं करते।**

**भाई! तेरा वीर्यगुण स्वभाव से ही ऐसा है कि वह किसी पर या विकार की रचना कर ही नहीं सकता।**

यदि वीर्यगुण स्वभाव से ही ऐसा है कि वह किसी पर या विकार की रचना करता हो तो सदा ही उसकी रचना करता रहे। तब फिर आत्मा की रागरहित वीतरागी मुक्तदशा किसप्रकार हो?

इसलिए परवस्तु में कुछ फेरबदल करे अथवा विकार की रचना करे – वास्तव में आत्मा में ऐसा बल/वीर्य ही नहीं है। अतः स्वरूप की/सम्यग्दर्शनादि की रचना में पर अथवा रागादिभाव कारण नहीं हैं।

**प्रश्न –** यदि आत्मा परवस्तु का कुछ नहीं कर सकता तो फिर इस जगत की रचना कौन करता है?

**उत्तर –** अरे भाई! यह छह द्रव्यमय लोक अकृत्रिम स्वयंसिद्ध है। इसकी रचना करनेवाला कोई दूसरा नहीं है। 'आत्मा पर की रचना करता है' – ऐसा मानना तो महामूढ़ता है। कोई अज्ञानी पर को/ईश्वर को जगत की रचना करनेवाला मानता है; परन्तु अनन्त आत्मबल, अनन्तवीर्य के धनी अरहन्त और सिद्ध भगवान भी पर की रचना करने में असमर्थ हैं। यद्यपि उनमें **अपने स्वरूप की रचना करने की पूर्ण – अनन्त सामर्थ्य है; परन्तु पर का कुछ भी करने के लिए वे पंगु हैं/असमर्थ हैं।**

**आत्मा स्वयं ही अपनी पर्याय की रचना अपनी वीर्यशक्ति के द्वारा करता है। कोई ईश्वर अथवा परनिमित्त आत्मा की पर्याय की रचना करता हो–ऐसा तीनकाल में भी नहीं है। अहा...! ऐसी वीर्यशक्ति आत्मा में त्रिकाल है। ऐसी अपनी वीर्यशक्ति को जानकर अभेद चिन्मात्र नित्यानन्द–स्वरूप आत्मवस्तु में तन्मय होकर प्रवर्तन करना ही मोक्षमार्ग है, धर्म है।** (क्रमशः)





# ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

## आत्मानुभूति

**प्रश्न :** आत्मानुभव करने के लिए प्रथम क्या करना चाहिए ?

**उत्तर :** प्रथम यह निश्चित करना कि मैं शरीरादि परद्रव्यों का कुछ नहीं कर सकता और जो विकार होता है, वह कर्म से नहीं; किन्तु मेरे अपने ही अपराध से होता है – ऐसा निश्चय करने के बाद विकार मेरा स्वरूप नहीं, मैं तो शुद्ध चैतन्यमूर्ति ज्ञायक हूँ – ऐसा निर्णय करके ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मा के सन्मुख होने का अन्तर प्रयत्न करना चाहिए।

**प्रश्न :** पहले व्रतादि का अभ्यास तो करना चाहिए न ?

**उत्तर :** सर्वप्रथम राग से भिन्न होने का अभ्यास करना चाहिए। राग से भेदज्ञान के अभ्यास बिना व्रतादि का अभ्यास करना तो सचमुच मिथ्यात्व का ही अभ्यास करना है।

**प्रश्न :** आत्मा प्राप्त करने के लिए सारे दिन क्या करना चाहिए ?

**उत्तर :** सारे दिन शास्त्र का अभ्यास करना, विचार-मनन करके तत्त्व का निर्णय करना तथा शरीरादि से एवं राग से भेदज्ञान करने का अभ्यास करना। रागादि से भिन्नता का अभ्यास करते-करते आत्मा का अनुभव होता है।

**प्रश्न :** अभ्यास किस प्रकार का करना चाहिए ?

**उत्तर :** शास्त्र वाँचना, श्रवण, सत्समागम करना चाहिए।

**प्रश्न :** यह सारा अभ्यास सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के लिए तो अकिंचित्कर है न?

**उत्तर :** यद्यपि सम्यग्दर्शन आत्मा के लक्ष्य से ही होता है, तथापि स्वाध्याय, श्रवण, सत्समागम आदि का विकल्प आता ही है, उससे परलक्षी ज्ञान निर्मल होता है। शास्त्र में अनेक स्थानों पर आता है कि आगम का अभ्यास करो। जिसे आत्मा चाहिए, उसे आत्मा के बतानेवाले देव-शास्त्र-गुरु के समागम का विकल्प आता ही है।

**प्रश्न :** अन्तर्दृष्टि करने का उपाय क्या है?

**उत्तर :** अन्तर्दृष्टि का उपाय स्वसन्मुख होकर अन्तर में दृष्टि करना है। सीधा अन्तर्मुख होकर वस्तु को पकड़े - यही उपाय है, पश्चात् ढीला करके व्यवहार से अनेक बातें कही जाती हैं। सविकल्प भेदज्ञान से निर्विकल्प भेदज्ञान होता है - ऐसा कथन आता है।

**प्रश्न :** सविकल्प भेदज्ञान से निर्विकल्प भेदज्ञान होता है न ?

**उत्तर :** सविकल्प भेदज्ञान से निर्विकल्प भेदज्ञान नहीं होता; किन्तु व्यवहार से कथन में आता है।

**प्रश्न :** गुरुवाणी से आत्मवस्तु का स्वीकार करने पर भी अनुभव क्यों नहीं होता? अनुभव होने में क्या शेष रह जाता है ?

**उत्तर :** गुरुवाणी से स्वीकार करना अथवा विकल्प से स्वीकार करना वास्तविक स्वीकार करना नहीं है। अपने भाव से-अपनी आत्मा से स्वीकार करना चाहिए। श्री कुन्दकुन्दाचार्य ने कहा है कि जो हम कहते हैं, वह तुम अपने स्वानुभव से प्रमाण करना। जो अपने अन्तर से सच्चा निर्णय करेगा, उसको अनुभव होगा। ●

**पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -**
**वेबसाईट - www.vitragvani.com**
**संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई**
**Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com**
**ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।**





## समाचार दर्शन -

**43वें आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर के अन्तर्गत -**

# विभिन्न संगोष्ठियाँ सानन्द संपन्न

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित 43वें आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दोपहर में विभिन्न संगोष्ठियों का आयोजन हुआ।

● **पहला अधिकार -** दिनांक 20 जुलाई को पीठबंध प्ररूपक प्रथम अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. दीपकजी वैद्य जयपुर, विशेषज्ञ विद्वान पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, मुख्य अतिथि पण्डित शिखरचंदजी विदिशा एवं विशिष्ट अतिथि श्री विपुलभाई कांतिभाई मोटानी मुम्बई थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण विदुषी परिणति जैन विदिशा ने एवं संचालन पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना ने किया।

● **द्वितीय अधिकार -** दिनांक 21 जुलाई को संसार अवस्था का प्ररूपक द्वितीय अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, विशेषज्ञ विद्वान डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, मुख्य अतिथि श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि श्री अतुलभाई खारा अमेरिका थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ ने एवं संचालन विदुषी प्रतीति मोदी नागपुर ने किया।

● **तृतीय अधिकार -** दिनांक 22 जुलाई को संसार दु:ख और मोक्षसुख का निरूपक तृतीय अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, विशेषज्ञ विद्वान डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, मुख्य अतिथि श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं विशिष्ट अतिथि श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर ने एवं संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने किया।

● **चौथा अधिकार -** दिनांक 23 जुलाई को मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र का निरूपक चतुर्थ अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, विशेषज्ञ विद्वान पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. किरणजी शाह पुणे थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम ने एवं संचालन पण्डित नीशूजी शास्त्री जयपुर ने किया।

● **छठवाँ अधिकार –** दिनांक 24 जुलाई को कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का प्रतिषेधक छठवाँ अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष ब्र. अभिनन्दनजी देवलाली, विशेषज्ञ विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, मुख्य अतिथि श्री संजयजी दीवान सूरत एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा थे।

गोष्ठी का मंगलाचरण डॉ. विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने एवं संचालन डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

● **सातवाँ अधिकार (प्रथम) –** दिनांक 25 जुलाई को जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचक सातवाँ अधिकार (प्रथम) विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, विशेषज्ञ विद्वान पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, मुख्य अतिथि श्री अजितप्रसादजी दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि श्री ताराचंदजी सौगानी जयपुर एवं थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली ने एवं संचालन पण्डित विनीतजी शास्त्री मुम्बई ने किया।

● **सातवाँ अधिकार (द्वितीय) –** दिनांक 26 जुलाई को जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचक सातवाँ अधिकार (द्वितीय) विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, विशेषज्ञ विद्वान डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, मुख्य अतिथि श्री अशोकजी भोपाल एवं विशिष्ट अतिथि श्री वीरेशजी कासलीवाल सूरत थे।

गोष्ठी का मंगलाचरण पण्डित संजीवजी दिल्ली ने एवं संचालन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

● **आठवाँ अधिकार –** दिनांक 27 जुलाई को उपदेश स्वरूप विवेचक आठवाँ अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. अरुणजी शास्त्री जयपुर, विशेषज्ञ विद्वान पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, मुख्य अतिथि श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर एवं विशिष्ट अतिथि श्री माणकचंदजी मुम्बई थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित संदेशजी शास्त्री दिल्ली ने एवं संचालन पण्डित गौरवजी उखलकर जयपुर ने किया।

● **नौवाँ अधिकार –** दिनांक 28 जुलाई को मोक्षमार्ग का स्वरूप प्ररूपक नौवाँ अधिकार विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, विशेषज्ञ विद्वान पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर एवं विशिष्ट अतिथि श्री निशिकांतजी औरंगाबाद थे।

गोष्ठी का मंगलाचरण पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना एवं संचालन विदुषी अनुप्रेक्षा शास्त्री मुम्बई ने किया। सभी गोष्ठियों का संयोजन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया।





## डॉ. भारिल्ल की पद्य रचनाओं का ऑडियो लोकार्पण

**जयपुर (राज.) :** यहाँ आयोजित 43वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित 'सहजता', 'समाधि का सार', 'दो तरह के भगवान', 'जिसमें मेरा अपनापन है', 'ना बदलकर भी बदलना', 'यही है ध्यान...यही है योग', 'कोई किसी का क्यों करे?' आदि कृतियों का ऑडियो लोकार्पण पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने करवाया।

सभी रचनाओं का ऑडियो श्री गौरवजी सौगानी व श्रीमती दीपशिखाजी सौगानी जयपुर की ध्वनि में रिकॉर्ड किया गया है।

## महाविद्यालय स्थापना समारोह संपन्न

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की स्थापना दिनांक 24 जुलाई, 1977 को हुई। इसके 43 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्थापना समारोह आयोजित किया गया, जिसमें प्रात:काल सर्वप्रथम डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने महाविद्यालय का परिचय दिया तथा सायंकाल प्रथम प्रवचन के पश्चात् एक वीडियो के माध्यम से महाविद्यालय का विहंगावलोकन कराया गया। तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई के उद्बोधन का लाभ मिला।

## परमागम ऑनर्स की विशेष संगोष्ठी

**जयपुर (राज.) :** यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे 43वें आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर के अन्तर्गत परमागम ऑनर्स द्वारा दिनांक 26 जुलाई को **मोक्षमार्ग प्रकाशक की मौलिक विशेषताएं एवं मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि** विषय पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर सर्वप्रथम संचालनकर्ता विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई द्वारा परमागम ऑनर्स का परिचय दिया गया। तत्पश्चात् डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा 'जीव की कर्मोदयजन्य अवस्था और उसका मूलकारण', डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा 'मिथ्यात्व का निरूपण और राग-द्वेष की महिमा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा अनुयोगों का सुमेल एवं विदुषी स्वानुभूति जैन द्वारा सम्यग्दर्शन का सच्चा लक्षण विषय पर सारगर्भित संक्षिप्त मार्मिक व्याख्यान हुआ। अन्त में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा जैन मिथ्यादृष्टि विषय पर मार्मिकउद्बोधन प्राप्त हुआ।

गोष्ठी का मंगलाचरण बीजल शेठ ने किया। इस प्रसंग पर विश्वभर में चल रहे परमागम ऑनर्स के परीक्षा परिणाम भी घोषित किये गये।

# क्रमबद्धपर्याय विद्वत्संगोष्ठी सानन्द संपन्न

श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल मकरोनिया-सागर एवं सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट जयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 8 से 11 अगस्त तक क्रमबद्धपर्याय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के क्रमबद्धपर्याय (समयसार गाथा 308-311) पर तथा युगलजी कोटा के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' अमायन (ऑडियो), पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. अरुणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

गोष्ठी में पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री दौसा, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, श्री प्रमोदजी सागर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी पूना, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, पण्डित संयमजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जसवंतनगर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, डॉ. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, पण्डित शुभमजी शास्त्री ज्ञानोदय आदि के वक्तव्य हुए।

प्रात:काल पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा पूजन-विधान एवं सायंकाल पण्डित समकितजी शास्त्री सागर द्वारा देव-शास्त्र-गुरु भक्ति का आयोजन किया गया।

मीडिया प्रभारी के रूप श्री अखलेश समैया सागर, श्री दीपकराज जैन छिन्दवाड़ा, श्री सचिन जैन खनियांधाना, श्री प्रद्युम्न जैन फौजदार बड़ामलहरा का सहयोग प्राप्त हुआ। साथ ही प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोगियों व श्रोताओं का बहुत-बहुत आभार। संचालन पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर ने किया। कार्यक्रम का प्रसारण सर्वोदय अहिंसा के यूट्यूब चैनल पर हुआ, जिसके संचालन में पण्डित विनीत शास्त्री हटा, पण्डित वीतराग शास्त्री नागपुर एवं शाश्वत संजय राऊत औरंगाबाद का सहयोग प्राप्त हुआ। समस्त आयोजन डॉ. राकेशजी नागपुर के निर्देशन एवं श्री अरुणजी मोदी मकरोनिया सागर के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। **– प्रमोद मोदी, सागर**

# हार्दिक बधाई!

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक एवं वरिष्ठ विद्वान **डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर** को इस महामारी के काल में विशेष सुरक्षा उपाय एवं जागृति अभियान चलाने पर **भारत सिने एण्ड टी.वी. राइटर्स एसोसिएशन** द्वारा **कोरोना वारियर्स** के सम्मान से सम्मानित किया गया। उपरोक्त संस्था द्वारा ही अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार, सोनू सूद आदि विभिन्न हस्तियों को भी इसी प्रकार सम्मानित किया गया है।

टोडरमल महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई!





# रक्षाबंधन पर्व शिविर सानन्द संपन्न

**खनियांधाना (म.प्र.) :** रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर श्री नेमिनाथ दिग. जैन नया मंदिर ट्रस्ट अंतर्गत संचालित श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान नन्दीश्वर दिग. जैन विद्यापीठ चेतनबाग द्वारा दिनांक 1 से 3 अगस्त तक रक्षाबंधन पर्व शिविर एवं विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' अमायन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, डॉ. राकेशजी नागपुर, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, ब्र. हेमचंदजी देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित संजयजी जेवर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित राजकुमारजी उदयपुर, पण्डित राजकुमारजी गुना, पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर, चौधरी रतनचंदजी भोपाल, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित अजितजी अलवर, पण्डित पीयूषजी जयपुर, ब्र. सुनीलजी शिवपुरी, पण्डित सौरभजी इन्दौर, डॉ. प्रवीणजी बांसवाड़ा, पण्डित गणतंत्रजी आगरा, पण्डित संयमजी नागपुर, पण्डित पुनीतजी भोपाल, पण्डित संजयजी साव खनियांधाना, डॉ. विवेकजी छिन्दवाड़ा, विदुषी राजकुमारी दीदी दिल्ली, विदुषी स्वर्णलताजी नागपुर, डॉ. ममताजी उदयपुर, ब्र. प्रियंका दीदी खनियांधाना आदि विद्वानों का प्रवचन व गोष्ठी के माध्यम से लाभ मिला।

रात्रिकालीन कार्यक्रमों में प्रथम व द्वितीय दिन रक्षाबंधन पर्व कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन विद्यापीठ के प्राचार्य पण्डित दीपकजी शास्त्री 'ध्रुव' एवं पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा किया गया। **– दीपक शास्त्री 'ध्रुव', खनियांधाना**

# उपाध्याय वरिष्ठ का परीक्षा परिणाम

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय सत्र 2019-20 का उपाध्याय वरिष्ठ कक्षा का परीक्षा परिणाम निम्नप्रकार रहा -

परीक्षा में कुल 32 छात्रों ने परीक्षा दी, जिसमें 20 विद्यार्थी प्रथम, 11 द्वितीय एवं 1 तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। प्रथम स्थान पर **अरविन्द जैन** पुत्र श्री आनंदकुमार जैन खड़ैरी (78.80%), द्वितीय स्थान पर **समर्थ जैन** पुत्र श्री अनिलकुमार जैन हरदा (77%) एवं तृतीय स्थान पर **सर्वज्ञ जैन** पुत्र श्री राकेशकुमार जैन गुढाचन्द्रजी (76.20%) रहे।

सभी विद्यार्थियों को टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं!

## ई-रत्नत्रय विधान, व्याख्यानमाला एवं संगोष्ठी संपन्न

**दिल्ली :** रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा, श्री दिव्य देशना ट्रस्ट दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन दिल्ली द्वारा ब्राह्मी सुन्दरी कन्या विद्या निकेतन विश्वास नगर के सहयोग से दिनांक 31 जुलाई से 3 अगस्त तक ई-रत्नत्रय विधान तथा 'आत्मानुभूति एवं चिंतन' विषय पर व्याख्यानमाला व संगोष्ठी का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, डॉ. मुकेशजी 'तन्मय' विदिशा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, श्री जे.पी.दोशी मुम्बई, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, पण्डित सुनीलजी ग्वालियर, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली आदि विद्वानों द्वारा व्याख्यानों का लाभ मिला।

समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में संपन्न हुआ।

समस्त कार्यक्रम यूट्यूब चैनल एवं ज़ूम एप पर प्रसारित हुआ, जिसका लगभग 5-6 हजार साधर्मियों ने लाभ लिया।

## 28वाँ ई-शिक्षण शिविर संपन्न

**चैतन्यधाम-अहमदाबाद (गुज.) :** यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा गुजरात के तत्त्वावधान में दिनांक 9 से 12 अगस्त तक 28वाँ ई-शिक्षण शिविर आयोजित हुआ, जिसमें चौंसठ ऋद्धि विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पूजन-विधान के पश्चात् सर्वप्रथम गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मोक्षमार्गप्रकाशक पर सी.डी. प्रवचन आयोजित हुए। तत्पश्चात् पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, पण्डित शैलेषभाई तलोद, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित संजयजी शास्त्री सिद्धार्थी इन्दौर द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। विधि-विधान के समस्त कार्य स्थानीय विद्वान पण्डित सचिनजी शास्त्री व पण्डित मनीषजी सिद्धांत द्वारा संपन्न हुये।

## आवश्यक सूचना

**जो पाठकगण वीतराग-विज्ञान (मासिक) ईमेल पर भी मंगाना चाहते हैं, वे अपनी ईमेल आई. डी. भेजें – वाट्सअप नं. 9660668506 पीयूष कुमार जैन,** व्यवस्थापक-वीतराग विज्ञान





## साप्ताहिक गोष्ठी सानन्द संपन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों की वाग्पटुता हेतु साप्ताहिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष दिनांक 18 जुलाई को '**हम और हमारा महाविद्यालय**' विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री उपस्थित थे। गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल ने की।

इस अवसर पर अमन जैन खनियांधाना ने 'टोडरमल से टोडरमल महाविद्यालय तक', पुष्प जैन आगरा ने 'आखिर क्यों लें इस महाविद्यालय में प्रवेश?', समकित जैन ईसागढ ने 'महाविद्यालय के प्रति मेरी कृतज्ञता', अनिमेष जैन राघौगढ ने 'महाविद्यालय का हमारे जीवन विकास में योगदान', अतिशय जैन चौरई ने 'विद्याओं में श्रेष्ठ विद्या-अध्यात्मविद्या' एवं अमन जैन आरोन ने 'शास्त्री करने की सार्थकता-लौकिक अलौकिक परिप्रेक्ष्य में' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी के संयोजक पवित्र जैन आगरा, आप्तअनुशील जैन दमोह एवं अखिल जैन मण्डीदीप थे। मंगलाचरण संदेश जैन दिल्ली ने एवं संचालन संभव जैन दिल्ली व अंकुर जैन खड़ैरी ने किया।

• दिनांक 2 अगस्त को **पंच परमेष्ठी : एक अनुशीलन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन दो सत्रों में हुआ। प्रथम सत्र में गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ थे।

इस अवसर पर महावीर भोकरे ने णमोकार मंत्र का उद्भव व प्रतिपाद्य, द्रव्य जैन ने अरहंत-सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप, अशेष जैन विदिशा ने आचार्य-उपाध्याय-साधु परमेष्ठी का स्वरूप, श्रेयांस जैन ने पंच परमेष्ठी में देव-गुरु का विभाजन एवं हर्षित जैन ने पंच परमेष्ठी से प्रयोजन सिद्धि विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंगलाचरण गौतमगणधर प्रधान ने एवं संचालन अर्पित जैन ने किया।

द्वितीय सत्र में अध्यक्षता पण्डित सुनीलजी जैनापुरे ने की।

इस अवसर पर केयूर जैन ने पंचपरमेष्ठी के पूज्यत्व का कारण, सुष्मित जैन ने पंचपरमेष्ठी की दुर्लभता, दिव्यांश जैन अलवर ने पंचपरमेष्ठी का स्वरूप : अनुयोगों के परिप्रेक्ष्य में, एकांश जैन ने पंचपरमेष्ठी का अन्यथा स्वरूप एवं प्रतीक जैन ने पंच परमेष्ठी की उपयोगिता क्यों और कब तक? विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किये।

मंगलाचरण हर्ष जैन फुटेरा ने एवं संचालन संयम जैन दिल्ली ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री एवं गौरवजी शास्त्री ने किया।

● दिनांक 9 अगस्त को **रक्षाबंधन पर्व धर्म का, रक्षा का त्यौहार महान** विषय पर गोष्ठी का आयोजन दो सत्रों में हुआ। प्रथम सत्र के अध्यक्ष पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर थे।

इस अवसर पर अक्षय जैन खड़ैरी ने **पर्व : क्या, कितने और क्यों?**, निश्चल जैन दिल्ली ने **रक्षाबंधन की कथा**, एकाग्र जैन ने **जैनेतर कथाओं से तुलना**, आदित्य जैन ने **अक्षम्य अपराध क्या?** एवं रितेश जैन ने **जागृत विवेक** विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

मंगलाचरण आकाश जैन कोटा ने एवं संचालन आयुष जैन जबलपुर ने किया।

द्वितीय सत्र के अध्यक्ष पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन थे।

इस अवसर पर सुरेन्द्र दास ने अकम्पनमुनीनाम् अलौकिक वृत्ति:, आदर्श जैन ने वात्सल्य अंग और मुनि विष्णुकुमार, हितंकर जैन ने कथानायक कौन और क्यों?, विकास जैन भिण्ड ने रक्षाबंधन का तात्त्विक बोध एवं निष्कर्ष जैन ने आखिर कैसे मनाएं रक्षा बंधन विषय पर अपने मनोगत व्यक्त किये। मंगलाचरण चेतन जैन, संचालन अनिकेत जैन एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

## शोक समाचार

(1) **भिण्डर-उदयपुर (राज.) निवासी पण्डित छोगालालजी हाथी** का 86 वर्ष की आयु में दिनांक 13 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त एवं अत्यंत स्वाध्यायी थे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1050-1050/- रुपये प्राप्त हुए।

(2) श्री धरसेन आचार्य जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा के प्राचार्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के पिताजी **बण्डा-सागर (म.प्र.) निवासी श्री राकेशजी जैन** का दिनांक 9 अगस्त को 62 वर्ष की आयु में शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल परिणामी एवं स्वाध्यायी थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 501/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) भावनगर (गुज.) मुमुक्षु मण्डल के प्रमुख, सोनगढ दिगम्बर जैन मंदिर के ट्रस्टी, भावनगर वीतराग सत्साहित्य ट्रस्ट के प्रमुख **श्री हीरालालजी काला** का दिनांक 5 अगस्त को 89 वर्ष की आयु में शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप नियमित स्वाध्याय करते थे तथा तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार में सदैव सक्रिय रहते थे। आपके द्वारा प्राचीन पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिये भी बहुत कार्य किया गया।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

**ज्ञातव्य है कि यह 26 अगस्त का अंक सितम्बर माह का ही अंक है।**

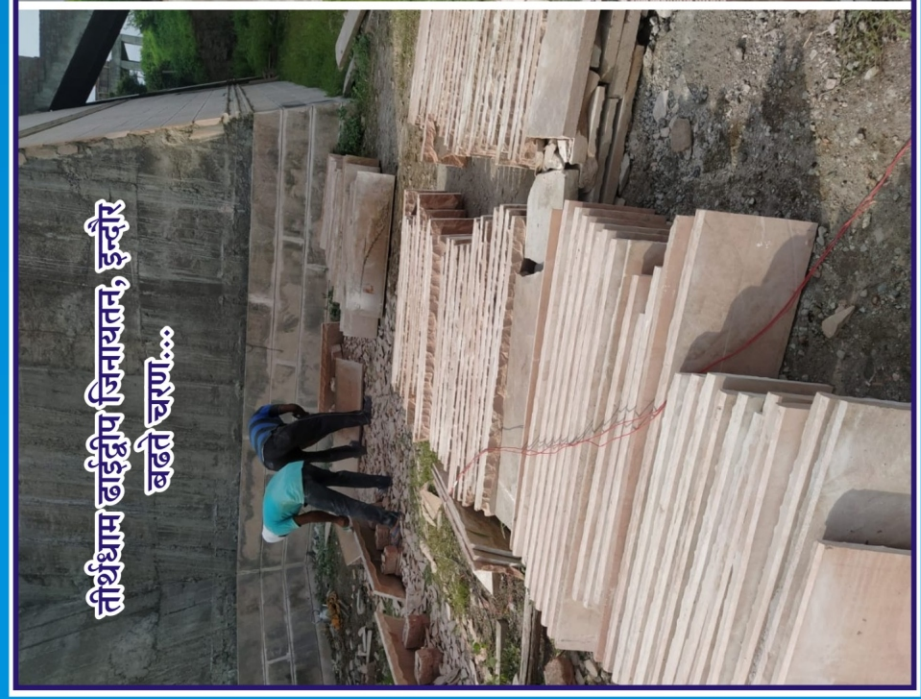

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20*

मंगल महोत्सव में आप सभी का स्वागत है।

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर द्वारा आयोजित

# श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान

दिनांक 25 दिसंबर 2020 से 1 जनवरी 2021 तक

निवेदक

श्री कुंदकुंद कहान दिगंबर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, इंदौर

## मंगल आमंत्रण

सम्पादक :
**डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल**
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
**डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
**ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.**
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 24 अगस्त 2020

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**